अध्याय 34

देश की सीमाएं और बंटवारा

प्रतिज्ञा के देश पर बल देना जो अध्याय 32 में आरम्भ हुआ था वह अध्याय 34 में भी जारी रहता है। शब्द अब उस देश की सीमाओं को निर्दिष्ट करता है।[1] इसे केवल 9½ गोत्रों में बांटा जाना था, क्योंकि 2½ गोत्रों को पहले ही यरदन के पूर्व में भूमि प्राप्त हो चुकी थी। उन दस लोगों का नाम दिया गया है (रूबेन और गाद को छोड़कर प्रत्येक गोत्र में से एक) जो विभिन्न गोत्रों को भूमि के बंटवारे की अध्यक्षता करेंगे।

यरदन के पश्चिम में देश की सीमाएं (34:1-12)

[1]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, [2]"इस्राएलियों को यह आज्ञा दे: जो देश तुम्हारा भाग होगा वह तो चारों ओर की सीमा तक का कनान देश है, इसलिये जब तुम कनान देश में पहुँचो, [3]तब तुम्हारा दक्षिणी प्रान्त सीन नामक जंगल से ले एदोम देश के किनारे किनारे होता हुआ चला जाए, और तुम्हारी दक्षिणी सीमा खारे ताल के सिरे पर आरम्भ होकर पश्चिम की ओर चले; [4]वहाँ से तुम्हारी सीमा अक्रब्बीम नामक चढ़ाई के दक्षिण की ओर पहुँचकर मुड़े, और सीन तक आए, और कादेशबर्ने के दक्षिण की ओर निकले, और हसरद्दार तक बढ़के अस्मोन तक पहुँचे; [5]फिर वह सीमा अस्मोन से घूमकर मिस्र के नाले तक पहुँचे, और उसका अन्त समुद्र का तट ठहरे। [6]फिर पश्चिमी सीमा महासमुद्र हो; तुम्हारी पश्चिमी सीमा यही ठहरे। [7]तुम्हारी उत्तरी सीमा यह हो, अर्थात् तुम महासमुद्र से ले होर पर्वत तक सीमा बाँधना; [8]और होर पर्वत से हमात की घाटी तक सीमा बाँधना, और वह सदाद पर निकले; [9]फिर वह सीमा जिप्रोन तक पहुँचे, और हसरेनान पर निकले; तुम्हारी उत्तरी सीमा यही ठहरे। [10]फिर अपनी पूर्वी सीमा हसरेनान से शपाम तक बाँधना; [11]और वह सीमा शपाम से रिबला तक, जो ऐन के पूर्व की ओर है, नीचे को उतरते उतरते किन्नेरेत नामक ताल के पूर्व से लग जाए; [12]और वह सीमा यरदन तक उतरके खारे ताल के तट पर निकले। तुम्हारे देश की चारों सीमाएँ ये ही ठहरें।"

आयतें 1, 2. परमेश्वर ने, **मूसा** के माध्यम से, विशेष रूप से उस क्षेत्र की पहचान की, जो वह **इस्राएलियों को ... उनके भाग** के रूप में दे रहा था। **सीमाओं** का वर्णन दक्षिण से पश्चिम की ओर एवं उत्तर से पूर्व की ओर किया गया है। इस अध्याय में **कनान देश** का वर्णन प्राचीन मिस्र के स्रोतों में पाई गई भौगोलिक

जानकारी से मेल खाता है, जो पुस्तक की प्राचीनता का और अधिक प्रमाण प्रस्तुत करता है। "कनान जो पन्द्रहवीं शताब्दी ईसा पूर्व से ही मिस्री ओनोमास्टीका में एक भौगोलिक इकाई है, क्योंकि अठारहवें और उन्नीसवें राजवंशों के दौरान ... मिस्र ने कनान को अधिकांश भाग को नियंत्रित किया था।"[2]

आयतें 3-5. सबसे पहले **दक्षिणी प्रान्त** को निर्धारित किया गया था। यह **खारे ताल** (मृत सागर) के दक्षिणी छोर से आरम्भ होकर, **सीन नामक जंगल** से होते हुए दक्षिण तक गया, और इसके दक्षिणी छोर पर **कादेशबर्ने** तक गया, जहाँ से बारह भेदिए भेजे गए थे (13:21, 26)। **यह मिस्र के नाले** के उत्तर-पश्चिम तक गया, जो **समुद्र** तक फैला हुआ था।

आयत 6. पश्चिमी सीमा महासमुद्र (भूमध्य सागर) की **तट रेखा** थी। सर्दियों के तूफानों के लिए जाना जाने वाला इस समुद्र का प्राचीन लोगों द्वारा बहुत भय माना जाता था। यह माना जाता था कि यह भयंकर देवता यम्मु के साथ-साथ सर्प/समुद्री राक्षस लोटन का निवास स्थान था।[3] पलिश्ती, कनानी, और फिनिशियन भूमध्य सागर के किनारे रहते थे।

आयतें 7-9. उत्तरी सीमा महासमुद्र से आरम्भ होकर और **होर पर्वत** तक गई। यह "होर पर्वत" वह दक्षिणी होर पर्वत नहीं है जहाँ पर हारून की मृत्यु हुई थी (20:22-29; 33:38, 39)। सीमा **हमात** तक गई, जो जासूसी अभियान की उत्तरी सीमा थी (13:21)। सीमा **सदाद** तक पहुँच गई, जो वास्तव में देश का सबसे उत्तरी छोर था। वहाँ से यह, **सिप्रोन** तक पहुँची, और **हसरेनान** पर समाप्त हुई।

आयतें 10-12. पूर्वी सीमा एक **सीमा** रेखा थी जो **हसरेनान से** आरम्भ होकर **शपाम** से **रिबला** तक थी। नीचे को उतरते-उतरते **किन्नेरेत नामक ताल** (गलील की झील) के पूर्व से वह सीमा यरदन तक उतर के **खारे ताल** (मृत सागर) के तट तक गई।

कनान देश, महासमुद्र की पश्चिमी सीमा स्पष्ट है, और इसमें कोई संदेह नहीं है कि पूर्वी सीमा यरदन नदी थी; परन्तु कुछ अन्य स्थानों का स्थान स्पष्ट नहीं है। सबसे अधिक सम्भावना यह है, कि इस्राएल को दिए गए देश में मृत सागर से भूमध्य सागर तक एक सीधी रेखा से काफी नीचे; और उत्तरी और पूर्वी सीमाओं में भूमि का एक बड़ा, उभरा हुआ क्षेत्र सम्मिलित था, जो कि गलील की झील के उत्तरी सिरे से भूमध्यसागर तक एक सीमा रेखा के पूर्व में था।

रोनाल्ड बी. एलन ने देश के विस्तृत विवरण को "एक विश्वास विलेख, परमेश्वर की ओर से अपने लोगों के लिए एक कानूनी दस्तावेज ... जिसकी रचना [अध्याय 35 और 36 के लेखों सहित] लोगों में आत्मविश्वास का निर्माण करने और उन्हें यहोवा की आराधना करना जारी रखने के लिए उकसाने के लिए की गई थी"[4]। फिलिप जे. बड्डु ने इस पर विश्वास नहीं किया कि इस्राएल ने पूरी तरह से उस देश को अपने वश में कर लिया था जो उन्हें परमेश्वर ने उन्हें दिया था।[5] प्रतिज्ञा के देश के विषय में, उन्होंने कहा, "विवरण कुछ माप में आदर्श है, जो उस क्षेत्र के एक विस्तृत फैलाव का संकेत देता है जिसे इस्राएल ने कभी पूरी तरह से अपने वश में नहीं किया था।"[6] विद्वान इस बात से सहमत हैं कि इन आयतों में वर्णित पूरे

क्षेत्र पर इस्राएलियों ने कभी विजय प्राप्त नहीं की और न ही उन्हें नियंत्रित किया। फिर भी, अपनी मृत्यु से पहले, यहोशू ने कहा कि परमेश्वर ने इस्राएल से जो प्रतिज्ञाएँ की थीं, वे सभी पूरी हुईं (यहोशू 23:14)। परमेश्वर ने इस्राएल को देश दिया था; यदि इस्राएल ने उस देश के प्रत्येक भाग पर पूरी तरह से विजय प्राप्त नहीं की, जो परमेश्वर ने उन्हें दिया था, तो उसके उसे वश में करने में असफलता उनकी अपनी गलती थी, परमेश्वर की नहीं।

देश का बंटवारा (34:13-29)

[13]तब मूसा ने इस्राएलियों से फिर कहा, "जिस देश के तुम चिट्ठी डालकर अधिकारी होगे, और यहोवा ने उसे साढ़े नौ गोत्र के लोगों को देने की आज्ञा दी है, वह यही है; [14]परन्तु रूबेनियों और गादियों के गोत्र तो अपने-अपने पितरों के कुलों के अनुसार अपना-अपना भाग पा चुके हैं, और मनश्शे के आधे गोत्र के लोग भी अपना भाग पा चुके हैं; [15]अर्थात् उन ढाई गोत्रों के लोग यरीहो के पास यरदन के पार पूर्व दिशा में, जहाँ सूर्योदय होता है, अपना-अपना भाग पा चुके हैं।" [16]फिर यहोवा ने मूसा से कहा, [17]"जो पुरुष तुम लोगों के लिये उस देश को बाँटेंगे उनके नाम ये हैं: एलीआज़ार याजक और नून का पुत्र यहोशू। [18]और देश को बाँटने के लिये एक एक गोत्र का एक एक प्रधान ठहराना। [19]और इन पुरुषों के नाम ये हैं: यहूदागोत्री यपुन्ने का पुत्र कालेब, [20]शिमोनगोत्री अम्मीहूद का पुत्र शमूएल, [21]बिन्यामीनगोत्री किसलोन का पुत्र एलीदाद, [22]दानियों के गोत्र का प्रधान योग्ली का पुत्र बुक्की, [23]यूसुफियों में से मनश्शेइयों के गोत्र का प्रधान एपोद का पुत्र हन्नीएल, [24]और एप्रैमियों के गोत्र का प्रधान शिप्तान का पुत्र कमूएल, [25]जबूलूनियों के गोत्र का प्रधान पर्नाक का पुत्र एलीसापान, [26]इस्साकारियों के गोत्र का प्रधान अज्जान का पुत्र पलतीएल, [27]आशेरियों के गोत्र का प्रधान शलोमी का पुत्र अहीहूद, [28]और नप्तालियों के गोत्र का प्रधान अम्मीहूद का पुत्र पदहेल।" [29]जिन पुरुषों को यहोवा ने कनान देश को इस्राएलियों के लिये बाँटने की आज्ञा दी वे ये ही हैं।

आयतें 13. जो देश परमेश्वर **इस्राएलियों** को दे रहा था, उसके सीमा निर्धारण के बाद, **मूसा** ने उस भूमि को निर्दिष्ट किया जिसका **बंटवारा चिट्ठी डालकर** किया जाना था। **यहोवा** के द्वारा दी गई इस **सम्पत्ति** का बंटवारा **साढ़े नौ गोत्रों में किया** जाएगा।

आयतें 14-15. भूमि के बंटवारे के लिए इस योजना की आज्ञा दी गई क्योंकि **रूबेन** और **गाद** के गोत्र (और) **मनश्शे** के आधे गोत्र को पहले से ही **यरदन** के पूर्वी भाग में **उनके पितरों के कुल** के अनुसार देश का भाग मिल चुका था।

आयतें 16-18. आरम्भ में, **यहोवा** ने स्वयं **मूसा** को सभी **पुरुषों के नाम बताए जो** गोत्रों के मध्य देश वास्तविक बंटवारे के लिए उत्तरदायी होंगे। **एलीआज़ार याजक** और **नून के पुत्र यहोशू** को **देश के बंटवारे** का प्रभारी बनना था। **प्रत्येक**

गोत्र के **एक-एक प्रधान** (मनश्शे के आधे गोत्र समेत) के द्वारा उनकी सहायता की जानी थी जो कनान में भूमि प्राप्त करेंगे।

आयतें 19-29. कनान देश के बंटवारे के लिए नियुक्त किए गए **पुरुषों** की सूची उनके गोत्र के अनुसार दी गई है

गोत्र	*पिता*	*प्रधान*
यहूदा	**यपुन्ने**	**कालेब**
शिमोन	**अम्मीहूद**	**शमूएल**
बिन्यामीन	**किसलोन**	**एलीदाद**
दान	**योग्ली**	**बुक्की**
मनश्शे	**एपोद**	**हन्नीएल**
एप्रैम	**शिप्तान**	**कमूएल**
जबुलून	**पर्नाक**	**एलीसापान**
इस्साकार	**अज्जान**	**पलतीएल**
आशेर	**शलोमी**	**अहीहूद**
नप्ताली	**अम्मीहूद**	**पदहेल**

नाम लगभग उसी क्रम में दिए गए हैं जिसमें देश में दक्षिण से उत्तर की ओर गोत्रों को बसाया गया था।[7] गोत्रों से चुने गए दस पुरुषों में से केवल कालेब के नाम से गिनती के पाठक परिचित हैं। बारह भेदियों में से एक, वह अधिकांश लोगों के बुरे समाचार से असहमत था। उसकी पीढ़ी में, केवल उसे और यहोशू को प्रतिज्ञा किए गए देश में प्रवेश करने की अनुमति दी गई थी।

इस तरह की तीन सूचियाँ पूरी गिनती में पाई जाती हैं: कूच का क्रम (अध्याय 10), उन लोगों के नाम, जिन्होंने देश का भेद लिया (अध्याय 13), और वह सूची जो यहाँ (अध्याय 34) दी गई है। ये पुस्तक के प्रमुख मोड़ हैं।[8]

अनुप्रयोग

धार्मिक महत्व (अध्याय 34)

यह अध्याय धार्मिक रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह स्पष्ट करता है कि देश परमेश्वर का उपहार था, जैसा कि मूल रूप से अब्राहम और फिर इसहाक और याकूब से प्रतिज्ञा की गई थी (उत्पत्ति 13:14-16; 26:1-4; 28:10-15)। परमेश्वर ने कनान देश अपने लोगों को दे दिया, परन्तु उन्हें फिर भी इसे जीतने के लिए युद्ध करना पड़ा (देखें यहोशू 1-12)। एक नियमानुसार, लोगों को परमेश्वर के उपहारों को वश में करने के लिए कुछ करना चाहिए। उदाहरण के लिए, परमेश्वर हमें हमारा भोजन और वस्त्र प्रदान करता है, परन्तु हमें अभी भी उन्हें प्राप्त करने के लिए काम करना चाहिए-और उन्हें प्राप्त करने के लिए काम करने का अर्थ यह नहीं है कि वे परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए उपहार कम महत्व के हैं।

जब हम इन तरीकों से परमेश्वर के आज्ञाओं का पालन करते हैं, तो हम उसकी कृपा के द्वारा उपहार के रूप में उद्धार प्राप्त करते हैं (इफि. 2:8)। भले ही हमें उद्धार पाने के लिए कुछ करना है (मत्ती 7:21), उद्धार फिर भी एक उपहार है जिसके लिए हमें परमेश्वर की प्रशंसा करनी चाहिए।

प्रतिज्ञा का देश (34:1-12)

34:1-12 में, प्रतिज्ञा के देश का वर्णन किया गया है। प्रतिज्ञा मूल रूप से परमेश्वर ने अब्राहम (अब्राम) से की थी। परमेश्वर ने उसके वंशजों के माध्यम से पृथ्वी के सभी परिवारों के लिए एक महान देश, एक महान नाम और एक महान आशीष देने की प्रतिज्ञा की। उसने अब्राहम के वंशजों से कनान देश देने की प्रतिज्ञा भी की, जो पृथ्वी की धूल और आकाश के तारों के समान होंगे (उत्पत्ति 11:31; 12:1-7; 13:12-18; 15:5, 18-21)। प्रतिज्ञा को अब्राहम के दो वंशजों इसहाक और याकूब के साथ दोहराया गया (उत्पत्ति 26:2-4, 24; 28:3-15; 35:10-12)।

इब्रानियों के लेखक ने विश्वास पर महान अध्याय (अध्याय 11) में वर्णित भूमि का वर्णन इस प्रकार किया है:

> विश्वास ही से अब्राहम जब बुलाया गया तो आज्ञा मानकर ऐसी जगह निकल गया जिसे मीरास में लेने वाला था; और यह न जानता था कि मैं किधर जाता हूँ, तौभी निकल गया। विश्वास ही से उसने प्रतिज्ञा किए हुए देश में, पराए देश में परदेशी के समान, रहकर इसहाक और याकूब समेत, जो उसके साथ उसी प्रतिज्ञा के वारिस थे, तम्बुओं में वास किया …। इस कारण एक ही जन से, जो मरा हुआ सा था, आकाश के तारों और समुद्र के तीर के बालू के समान अनगिनत वंश उत्पन्न हुए। ये सब विश्वास ही की दशा में मरे; और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएँ नहीं पाईं, पर उन्हें दूर से देखकर आनन्दित हुए और मान लिया कि हम पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं …। विश्वास ही के द्वारा इन सब के विषय में अच्छी गवाही दी गई, तौभी उन्हें प्रतिज्ञा की हुई वस्तु न मिली। (इब्रा. 11:8, 9, 12, 13, 39)।

निर्गमन 3:16-18; 6:3-8 और 33:1 में प्रतिज्ञा के देश के पूरे होने का पूर्वावलोकन देखा गया है; क्योंकि इस्राएली मिस्र में बंधुआई में थे। जब इस्राएल देश में प्रवेश करने के लिए यरदन को पार करने के लिए तैयार था, मूसा ने व्यवस्थाविवरण 1:7-11; 34:1-4 में प्रतिज्ञा का वर्णन किया। यहोशू 1:1-6; 6-12; 23:5, 9, 10; 24:11-13 में इसकी वास्तविक पूर्ति हुई जैसा कि इस्राएल ने देश में प्रवेश किया और देश पर विजय प्राप्त की (देखें न्यायियों 1:1-2:10)।

समाप्ति नोट

[1]गिनती 34 में प्रस्तुत भूमि की सीमाओं के अधिक विस्तृत वर्णन और उन सीमाओं को निर्धारित करने में सम्मिलित कठिनाइयों की चर्चा के लिए, देखें रोनॉल्ड बी. एल्लन, "गिनती," *एक्सपोजीटर्स*

बाइबल कमेंट्री, वॉल्यूम 2, *उत्पत्ति-गिनती*, संपादक फ्रैंक ई. गैबलीन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः जॉडरवैन पब्लिशिंग हाऊस, 1990), 994-96. [2]आर. डेनिस कोले, "नम्बर्स," इन *ज़ोंडर्वन इलस्ट्रेटेड बाइबल बैकग्राउन्ड्स कॉमेन्टरी*, वॉल्यूम 1, *उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, व्यवस्थाविवरण*, एड. जॉन एच. वाल्टन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः ज़ोंडर्वन, 2009), 399. [3]उपरोक्त, 400. [4]एलन, 993. [5]फिलिप जे. बड, *गिनती*, वर्ड बिब्लिकल कमेंट्री, वॉल्यूम 5 [वाको, टेक्ससः वर्ड बुक्स, 1984], 366. [6]उपरोक्त, 367. [7]गॉर्डन जे. वेनहैम, *गिनती*, द टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्रीज (डाउनर्स ग्रोव, इलनॉयसः इंटर-वर्सिटी प्रेस, 1981), 232. देखें यहोशू 14-19. [8] डब्लू. एच. बेलिंगर, जूनियर, *लैव्यव्यवस्था, गिनती*, न्यू इंटरनेशनल बिब्लिकल कमेंट्री (पीबॉडी, मासाचुसेट्सः हेन्ड्रिक्शन पब्लिशर्स, 2001), 312.